

228
stotra
Hindu

1.852 I

शस्त
१

वीगरोशायनम् ॥ निर्मेद्याकाशवर्णं क्र
कटितवदनं गंडरं कोटरीक्षं कुरां निर्मासदेहं
विपुलतनुं रुहं रौद्रकालाग्निभूतिम् ॥ कूर्माग्न ॥ राम
रुद्रसौरिकसमवलियुताधूपदीपाचिंतन ॥ १ ॥

नत्वाहं स्तोत्रमेतद्गुह्यगणाविगुराणां शान्तिका
मायठिष्ये ॥ १ ॥ प्रणाम्य देवदेवेश सर्वग्रह
निवारणम् ॥ शनैश्चरस्य शान्त्यर्थं चिंतया
मासयाधिवः ॥ २ ॥ रघुवंशेति विख्यातो रा

॥ शक्त ॥
॥ २ ॥

जादशरथपुरा ॥ चक्रवर्तिसविज्ञेयः सप्तद्वी
पाधिपोभवत् ॥ ३ ॥ कृतिकान्तेशानिंशात्वादौ
वशैः ज्ञापितो हि सः ॥ राहिराणीभेदयित्वा तु श
निर्यास्यति सांप्रतं ॥ ४ ॥ शंकटोभेदश्च कुरु

॥ राम ॥
॥ २ ॥

एसुरभयंकरं ॥ द्वादशाष्टतुडुर्भिक्षं भाविष्यति
सुशरुणां ॥ ५ ॥ ऐतच्छ्रुत्वा ततो वाक्यं मंत्रिभिः
सह पार्थिवः ॥ देशाश्च नगरग्रामाभयभीता
श्च जंतवः ॥ ६ ॥ ब्रूवन्ति सर्वलोकाः क्षयमेतत्स

शस्त
३॥

मागताः॥ आकुलं तु जगद् दृष्ट्वा पौरं जानपदा
दिकं ७॥ पप्रच्छ प्रणतो राजा स वसिष्ठ प्रभु
रवा न्द्विजान्॥ समाधानं किमत्रास्ति ब्रह्म
द्विजसत्तमाः॥ ८॥ वसिष्ठ उवाच॥ प्रजानां ३॥ राम ॥

प्रतिरक्षेयं तस्मिन्भिन्ने कुतः प्रजाः॥ अयं यो
गसमाध्यंतो ब्रह्मशक्रादिभिस्तथा॥ ९॥ न
दासं चिंत्य मनसा साहसं परमं महत्॥ समा
दायधनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमं चितं॥ १०॥

शस्त

४

रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमंडलं ॥ सपाद
योजनानां तु लक्षसूर्योपरि स्थितं ॥ ११ ॥
रोहिणीं पृष्ठमां स्यात्पराजादृशरथसदा ॥ १
थेतुः कांचने दिव्ये मणिरत्नविभूषिते ॥ १२ ॥

॥ राम ॥

॥ ४ ॥

हंसवर्गा ह्यैर्युक्ते महाकेतुसमुद्भिते ॥ दीप्य
माने महारत्ने किरीटि मुकुटोज्ज्वले ॥ १३ ॥
वभ्राजस्यत दाकाशे दितियद्भवभास्करः ॥
कृतिकान्ते शानिस्थित्वा प्राविश किंलरोहि

शास्त्र
५

श्री १४॥ आकर्णकृष्टकोदंडसंहरास्त्रं नि
योजितं दृष्ट्वा दशरथं चापेन स्थौलं भ्रुकुटी
मुखः १५॥ संहरास्त्रं शनिं दृष्ट्वा सुरासुरनिष
दनं हसित्वा तद्भयात् कौरि रिवचनमब्रवीत् ॥ रामः ॥
॥ ५ ॥

१६॥ शनिरुवाच ॥ पौरुषं तव राजेंद्र परं रिपुभ
यं करं ॥ देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविश्राधरस्त
था ॥ १७॥ मया बललोकिताः सर्वभक्षुचाश्च
व्रजंति ते ॥ तुष्टो हं तव राजेंद्र तपसा पौरुषे

॥ शस्त ॥

॥ ६ ॥

ॐ
शाच ॥ १८ ॥ वरं ब्रूहि च दशम्यामि मनसा जदभि
क्षितं ॥ दशरथ उवाच ॥ रोहिणी भेदयित्वा
तु न गंतव्यं त्वया सने ॥ १९ ॥ सरितः सागराः
यावद्यावच्चंद्रा कर्मदिनी ॥ तावदिष्टं मया

॥ राम ॥
॥ ६ ॥

सौरेनान्यमिच्छामि ते वरं ॥ २० ॥ एवमस्तु शान्ति
प्रीतो वरं दत्त्वा तु शाश्वतं ॥ संप्राप्य तद्वरं रा
जा कृतकृत्यो भवन्नदा ॥ २१ ॥ द्वादशाष्टं तु उ
र्भिक्षं न कदापि भविष्यति ॥ कीर्तिरेवामदी

॥ शक्त ॥

॥ ७ ॥

यातुत्रैलोक्येपि भविष्यति ॥ २२ ॥ एवं वरं तु संप्राप्य हृष्टो मास पार्थिवः ॥ रथोपरि धनुःस्थाप्य भूत्वा चैव द्रुतांजलिः ॥ २३ ॥ ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकं ॥ राजाद

॥ राम ॥

॥ ७ ॥

शरथसोत्रं सौरेरिदमथाकरोत् ॥ २४ ॥ ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिखिकंठनिभाय च ॥ नमो नीलमयूषाय नीलोत्पलनिभाय च ॥ २५ ॥ नमो निर्मासदेहाय दीर्घश्मश्रुजयय च ॥ न

॥ शक्त ॥

॥ ८ ॥

मो विशालनेत्राय शुक्लोदरभयाय च ॥ २६ ॥
नमः पुरुषगात्राय स्थूलरौमाय ते नमः ॥ न
मो नित्यं शुभार्ताय त्वत्प्राय नमो नमः ॥ २७ ॥
नमो दीर्घाय शुक्लाय कालदृष्टे नमो सुते ॥

॥ राम ॥

॥ ८ ॥

नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्षाय वै नमः ॥ २८ ॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालिने ॥ न
मस्ते सर्वसूक्ष्माय वलीमुख नमो सुते ॥ २९ ॥
सूर्ये पुत्र नमस्ते सुभास्करे भयदाय ते ॥

शस्त

५

अधोदृष्टे नमस्तेस्तु संवर्तक नमो नमः ॥ ३० ॥

नमोष्कालाग्नि रुद्राय कृतांताय नमो नमः ॥

नमो मंद गते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोस्तुते ॥ ३१ ॥

शनेश्वर नमस्तुभ्यं सर्व भक्षाय ते नमः ॥ न

राम

५

मः संहररूपाय भस्मांगाय नमस्तुते ॥ न

पसादग्ध देहाय नित्यं योग रताय च ॥ ३२ ॥

ज्ञानचक्षुर नमस्तेस्तु कश्यपात्मजसूनुवे ॥

उद्योददासि राज्यं तु रुष्ट संहरते क्षणात् ॥ ३३ ॥

शस्त

॥ १० ॥

देवासुरमनुष्याश्च पक्षिराजड्विदं ॥ त्वया व सथा
लोकिताः सर्वेनाशमाशु व्रजन्ति ते ॥ ३४ ॥ ब्रह्मा
शक्रो मनुष्याश्च नवयसप्रतारकाः ॥ राज्य ॥ राम ॥
भृष्टाः पतन्ती हतवह्न्या वलोकिताः ॥ ३५ ॥ देशा ॥ १० ॥

अनगरग्रामादीनां चैव दुर्मात्रथा ॥ त्वया
वलोकिताः सर्वेनाशयन्ति समन्ततः ॥ ३६ ॥
प्रसादं कुरु मे सौरे वरार्थं हन्तवस्थितः ॥ एवं
स्तुतस्तत्सौरिग्रहराजो महाबल ॥ ३७ ॥ अथ

शस्त
११

वीत्तशानिर्वाक्यं प्रीतः पार्थिवसत्तमः ॥ तुष्टो हं
तव राज्येद्रुत्तोत्रेणानेन सर्वशः ॥ ३८ ॥ वरं वू
हि च दास्यामि यथेच्छं रघुनन्दनः ॥ दशरथ उ
वाच ॥ अद्य प्रभृति ते सोऽरे पीडाकार्यं न कस्य

॥ राम ॥
११ ॥

चित् ॥ ३९ ॥ देवा सुरमनुष्याणां मयं पशुपक्षि
शरीरिणां ॥ शनिरुवाच ॥ ग्रहार्थं तु ग्रहज्ञेया
ग्रहपीडाकारास्मृताः ॥ ४० ॥ अदेयोऽयं वरस्तुभ्यं
युक्त्वा हं तु ददामि ते ॥ त्वया प्रोक्तमिदं स्तोत्रं य

॥ शस्त ॥

॥ १२ ॥

॥ ४१ ॥
पठिष्यन्ति मानवः ॥ एककालं द्विकालं वा पीडा
मुचामितस्य तु ॥ देवा सुर मनुष्यादिसिद्धविद्या
धरो रगाः ॥ ४२ ॥ मृत्युस्थाने स्थितो वापि जन्म ॥ राम ॥
पीडा कृते तथा ॥ यः पुनश्च दया युक्तः शुचिस्था ॥ १२ ॥

ने स महात्मनः ॥ ४३ ॥ शमी पत्रैः समभ्यर्च्य
प्रति मां लोहजां मम ॥ मद्दिने तु विशेषेण
लोत्रेणानेन पूजयेत् ॥ ४४ ॥ पूजयित्वा
जयेत् लोत्रं मूत्राचैव कृतांजलिः ॥ तस्य पी

॥ शक्त ॥

॥ १४ ॥

जानचैवाहं करिष्यामि कदाचन ॥ ४५ ॥ गोचरे ज
मलने वा दशा सुविदशा सुख ॥ त्यजामि सततं
तस्य पीडा चान्यग्रहस्य च ॥ ४६ ॥ अनेनेव प्रकार ॥ राम ॥
रेणा पीडा मुक्तं जगद्भवेत् ॥ वरद्वयं तु संप्राप्य रा ॥ १३ ॥

जादशार्थस्तदा ॥ ४७ ॥ मने कृतार्थमात्मानं
नमस्कृत्य शनैश्चरं ॥ शनिना चाभ्यनुशात
स्वस्थानं चागमस्तदा ॥ ४८ ॥ स्वस्थानं स
ततो भूत्वा प्राप्नोति कामो भवति तदा ॥ यद्दं प्रात

शस्त्र

१४

रुत्थाय वरं लोत्रमिदं यठेत् ॥ ४९ ॥ पूजयित्वा
शनिचापितस्य तु व्यतिभाक्करि ॥ सर्वाभीष्ट
प्रदोति त्मं भविष्यति न संसयः ॥ ५० ॥ इति श्री
स्कंदपुराणे दशरथकृतं शनैश्वरलोत्रं संपूर्णं

॥ राम ॥

॥ १४ ॥

राम ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया
यदि शुभो वा अशुभो वा नमो दोषो न दीयते ॥
लिखितं पृथिमानले ॥ शुभं नमस्तु ॥

श्रीभी

१५

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीभीमभैरवायनमः

॥ वृकोदरमहावीरोदोपदीप्राणवध्वभः ॥

किंचकारिर्महाभोगीकोलेशश्चार्जुनाग्रजः

॥ १ ॥ कुंतिपुत्रोव्याघ्रदेहोहस्तिनापुररक्ष

॥ स्तोत्र ॥

॥ १५ ॥

कः ॥ दुःसाशनोनिहंतीचहिडिवाप्रारानायकः

॥ २ ॥ एतद्वादशनामानि त्रिसंध्येयपठेन्नरः ॥

सर्वभद्रमवाप्नोति धनाध्याजायते नरः ॥ ३ ॥

वाणिज्यलभते लाभसंयामे विजयप्रदः ॥ स

श्रीभी

१६

वसोगविनश्यतिलभतेवांछितंफलं ॥ ४ ॥
डाकिनीभूतप्रेतानां कुष्माण्डानां चरक्षसाः ॥
योगिनीनां च देवानां दोषनाशयतेऽवमु ॥ ५ ॥
॥ इति श्रीभीमभैरवद्वादशनामस्तोत्रं समाप्तं ॥

स्तोत्र

१६

ॐ ॥ शुभम् ॥

सूक्तो

७

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसूर्यायनमः॥

उदयगिरिमुपेतं भास्करं यमहस्तं सकलभु
वननेत्रं रत्नरत्नो मध्येयं तिमिरकरि मृगेंद्रं वो
धकं पद्मिनीनां॥ सुरवरमभिवंदे सुंदरं विश्व

राम

७

दीपं॥ नमो यज्ञप्रबोधाय नमस्ते कृतसाक्षिणे
नमो प्रत्यक्षदेवायो भास्कराय नमोनमः॥ १
इति श्रीसूर्यस्तोत्रं संपूर्णं शुभं नमस्तु॥

SHIA PRINCES.

I 1852

1244. 1245. 1246. 1247. 1248. 1249. 1250. 1251. 1252. 1253. 1254. 1255. 1256. 1257. 1258. 1259. 1260. 1261. 1262. 1263. 1264. 1265. 1266. 1267. 1268. 1269. 1270. 1271. 1272. 1273. 1274. 1275. 1276. 1277. 1278. 1279. 1280. 1281. 1282. 1283. 1284. 1285. 1286. 1287. 1288. 1289. 1290. 1291. 1292. 1293. 1294. 1295. 1296. 1297. 1298. 1299. 1300. 1301. 1302. 1303. 1304. 1305. 1306. 1307. 1308. 1309. 1310. 1311. 1312. 1313. 1314. 1315. 1316. 1317. 1318. 1319. 1320. 1321. 1322. 1323. 1324. 1325. 1326. 1327. 1328. 1329. 1330. 1331. 1332. 1333. 1334. 1335. 1336. 1337. 1338. 1339. 1340. 1341. 1342. 1343. 1344. 1345. 1346. 1347. 1348. 1349. 1350. 1351. 1352. 1353. 1354. 1355. 1356. 1357. 1358. 1359. 1360. 1361. 1362. 1363. 1364. 1365. 1366. 1367. 1368. 1369. 1370. 1371. 1372. 1373. 1374. 1375. 1376. 1377. 1378. 1379. 1380. 1381. 1382. 1383. 1384. 1385. 1386. 1387. 1388. 1389. 1390. 1391. 1392. 1393. 1394. 1395. 1396. 1397. 1398. 1399. 1400. 1401. 1402. 1403. 1404. 1405. 1406. 1407. 1408. 1409. 1410. 1411. 1412. 1413. 1414. 1415. 1416. 1417. 1418. 1419. 1420. 1421. 1422. 1423. 1424. 1425. 1426. 1427. 1428. 1429. 1430. 1431. 1432. 1433. 1434. 1435. 1436. 1437. 1438. 1439. 1440. 1441. 1442. 1443. 1444. 1445. 1446. 1447. 1448. 1449. 1450. 1451. 1452. 1453. 1454. 1455. 1456. 1457. 1458. 1459. 1460. 1461. 1462. 1463. 1464. 1465. 1466. 1467. 1468. 1469. 1470. 1471. 1472. 1473. 1474. 1475. 1476. 1477. 1478. 1479. 1480. 1481. 1482. 1483. 1484. 1485. 1486. 1487. 1488. 1489. 1490. 1491. 1492. 1493. 1494. 1495. 1496. 1497. 1498. 1499. 1500. 1501. 1502. 1503. 1504. 1505. 1506. 1507. 1508. 1509. 1510. 1511. 1512. 1513. 1514. 1515. 1516. 1517. 1518. 1519. 1520. 1521. 1522. 1523. 1524. 1525. 1526. 1527. 1528. 1529. 1530. 1531. 1532. 1533. 1534. 1535. 1536. 1537. 1538. 1539. 1540. 1541. 1542. 1543. 1544. 1545. 1546. 1547. 1548. 1549. 1550. 1551. 1552. 1553. 1554. 1555. 1556. 1557. 1558. 1559. 1560. 1561. 1562. 1563. 1564. 1565. 1566. 1567. 1568. 1569. 1570. 1571. 1572. 1573. 1574. 1575. 1576. 1577. 1578. 1579. 1580. 1581. 1582. 1583. 1584. 1585. 1586. 1587. 1588. 1589. 1590. 1591. 1592. 1593. 1594. 1595. 1596. 1597. 1598. 1599. 1600. 1601. 1602. 1603. 1604. 1605. 1606. 1607. 1608. 1609. 1610. 1611. 1612. 1613. 1614. 1615. 1616. 1617. 1618. 1619. 1620. 1621. 1622. 1623. 1624. 1625. 1626. 1627. 1628. 1629. 1630. 1631. 1632. 1633. 1634. 1635. 1636. 1637. 1638. 1639. 1640. 1641. 1642. 1643. 1644. 1645. 1646. 1647. 1648. 1649. 1650. 1651. 1652. 1653. 1654. 1655. 1656. 1657. 1658. 1659. 1660. 1661. 1662. 1663. 1664. 1665. 1666. 1667. 1668. 1669. 1670. 1671. 1672. 1673. 1674. 1675. 1676. 1677. 1678. 1679. 1680. 1681. 1682. 1683. 1684. 1685. 1686. 1687. 1688. 1689. 1690. 1691. 1692. 1693. 1694. 1695. 1696. 1697. 1698. 1699. 1700. 1701. 1702. 1703. 1704. 1705. 1706. 1707. 1708. 1709. 1710. 1711. 1712. 1713. 1714. 1715. 1716. 1717. 1718. 1719. 1720. 1721. 1722. 1723. 1724. 1725. 1726. 1727. 1728. 1729. 1730. 1731. 1732. 1733. 1734. 1735. 1736. 1737. 1738. 1739. 1740. 1741. 1742. 1743. 1744. 1745. 1746. 1747. 1748. 1749. 1750. 1751. 1752. 1753. 1754. 1755. 1756. 1757. 1758. 1759. 1760. 1761. 1762. 1763. 1764. 1765. 1766. 1767. 1768. 1769. 1770. 1771. 1772. 1773. 1774. 1775. 1776. 1777. 1778. 1779. 1780. 1781. 1782. 1783. 1784. 1785. 1786. 1787. 1788. 1789. 1790. 1791. 1792. 1793. 1794. 1795. 1796. 1797. 1798. 1799. 1800. 1801. 1802. 1803. 1804. 1805. 1806. 1807. 1808. 1809. 1810. 1811. 1812. 1813. 1814. 1815. 1816. 1817. 1818. 1819. 1820. 1821. 1822. 1823. 1824. 1825. 1826. 1827. 1828. 1829. 1830. 1831. 1832. 1833. 1834. 1835. 1836. 1837. 1838. 1839. 1840. 1841. 1842. 1843. 1844. 1845. 1846. 1847. 1848. 1849. 1850. 1851. 1852. 1853. 1854. 1855. 1856. 1857. 1858. 1859. 1860. 1861. 1862. 1863. 1864. 1865. 1866. 1867. 1868. 1869. 1870. 1871. 1872. 1873. 1874. 1875. 1876. 1877. 1878. 1879. 1880. 1881. 1882. 1883. 1884. 1885. 1886. 1887. 1888. 1889. 1890. 1891. 1892. 1893. 1894. 1895. 1896. 1897. 1898. 1899. 1900. 1901. 1902. 1903. 1904. 1905. 1906. 1907. 1908. 1909. 1910. 1911. 1912. 1913. 1914. 1915. 1916. 1917. 1918. 1919. 1920. 1921. 1922. 1923. 1924. 1925. 19